

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद-५, शुक्रवार, ता. १५-८-१९८०  
वचनामृत-६२, १०५, १४०, ४०१ प्रपयन नं. ८

श्रुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे, चिंतन करे, मंथन करे उसे-लवे कदाचित् सम्यग्दर्शन न हो तथापि-सम्यक्त्वसन्मुभता होती है. अंदर दृढ संस्कार डाले, उपयोग अेक विषयमें न टिके तो अन्यमें बहले, उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे, उपयोगमें सूक्ष्मता करते-करते, चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते हुये आगे बढे, वह श्रुव कमसे सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है.

६२.

वचनामृत, ६२. फिरसे किसीको सुननेका भाव है. सम्यग्दर्शन पानेकी क्वा है. जिसको सम्यग्दर्शन हो उसको तो आनंदका अनुभव होता है. इसलिये किसीको पूछना पडे या किसीको कलना पडे या उस विषयमें किसीसे कुछ सुनना पडे, ऐसा नहीं है. सम्यग्दर्शन जो है वह तो अनंत गुणका पिंड प्रभु, अनंत आनंदके स्वादका अनुभव करता हुआ सम्यग्दर्शन प्रगट होता है. आलाला..! और अेक सम्यग्दर्शन होनेके बाद पंचम गुणस्थान और मुनिकी दशा आती है. पहले नहीं आती. यहां दूरमें तो सम्यग्दर्शन सन्मुभ होनेके योग्य कौन है, यह कलते हैं.

‘श्रुव ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे,...’ आलाला..! श्रवणके लिये श्रवण नहीं. ज्ञायक स्वरूप भगवान अंदर, उसके लक्ष्यसे श्रवण करे. मुझे आयेगा तो मैं किसीको कल सकूं, मैं उपदेश दे सकूं, ऐसा कोई लक्ष्य नहीं. ज्ञायकके लक्ष्यसे. मात्र ज्ञाननेवाला आत्मा त्रिकावी ज्ञायकके लक्ष्यसे श्रवण करे. ‘चिंतन करे,...’ उसके लक्ष्यसे चिंतन करे. उसका लक्ष्य छोडकर चिंतन-बिंतन (करे) वह कोई चीज नहीं है. और ‘मंथन करे,...’ ज्ञायकके लक्ष्यसे अंदर मंथन करे. सूक्ष्म बात है, प्रभु! अभी तो समकित प्राप्त करनेकी रीतकी क्वा है यह. अंतर स्वरूप दृष्टिमें अनुभवमें जबतक आया नहीं, तबतक उसके सन्मुभ (लोकर) मंथन करे. आलाला..!

‘उसे-लवे कदाचित् सम्यग्दर्शन न हो तथापि-सम्यक्त्वसन्मुभता होती है.’ अंतरमें यदि स्वसन्मुभसे श्रवण, मनन, चिंतन, स्वसन्मुभसे श्रवण, चिंतन, मनन हो तो वह सम्यग्दर्शन सन्मुभ होता है. ‘अंदर दृढ संस्कार डाले,...’ बात

वह कि एक ही धून लगे अंदर. आनंदसागर प्रभु ज्ञायक, उस ज्ञायककी अंदर धून लगे. उस धूनमें दूसरी कोई चिंता रहे नहीं. ऐसी धून लगे तो वह समकितसन्मुष्ण है. ज्ञायककी धून लगे. कोई वांचनकी, श्रवणकी या दूसरी नहीं. अंदर ज्ञायककी धून लगे. चिदानंद भगवान ज्ञायक स्वरूप चैतन्य दल, अरुपी महासागर. स्वयंभूरमणु समुद्रमें तलमें रेती नहीं है. स्वयंभूरमणु समुद्र है, (उसके) तलमें रेत नहीं है. अकेले हिरा-माणिक्य भरे हैं. रत्न भरे हैं. सुना है? स्वयंभूरमणु समुद्रमें नीचे अकेले रत्न भरे हैं. रेती नहीं है. आहा..! दुनियाका दिभाव तो देओ. बाहरका दिभाव. स्वयंभूरमणु असंख्य जोजन लंबा है. पूरा रत्नसे भरा है, रेती नहीं. यह भगवान तो उसे भी जाननेवाला-देखनेवाला अपनेमें रहकर, उसकी किंमत क्या करना! उसमें अनंत रत्न जैसे भरे हैं कि स्वयंभूरमणु तो जडका रत्न है, यह चैतन्य आकर है. चैतन्यके रत्नका दरिया प्रभु है. हिन्दीमें छे आ जाता है.

ईसलिये कहते हैं कि 'अंदर दृढ संस्कार डाले, उपयोग एक विषयमें न टिके...' यह क्या कहते हैं? ज्ञान लक्ष्यमें लेने पर वहां कदाचित् उपयोग न टिके तो यह आनंद है, आत्मा आनंद है, जैसे उपयोगको पलटे. आत्मा अंदर शांत वीतरागस्वरूप है, जैसे विचारमें उपयोगको पलटाये. एक ही उपयोगमें न रह सके तो उपयोग (पलटे). लेकिन यह उपयोग, हां अंदर. अंदर गुणका उपयोग और भेद उपर लक्ष्यको पलटे. आहाहा..! 'तो अन्यमें बहले,...' तो अन्यमें बहले. 'उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे,...' जिसमें कोई चिंता नहीं है. पूरी दुनियासे उदास भाव. पूरी दुनिया मेरी नहीं है, मैं तो एक आत्मा आनंद हूं. आनंद सिवा मेरी कोई चीज बाहरमें नहीं है. ऐसी उदासीन अवस्था उसमें करके उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे. आहाहा..!

मुमुक्षु :- करे कि होता है?

उत्तर :- वह करे तब होता है न. अपने आप हो जाता है, ऐसा नहीं. करे तो होता है. आहाहा..!

'उपयोग सूक्ष्मसे सूक्ष्म करे.' आहाहा..! पर्यायमें, प्रत्येक द्रव्यकी पर्यायमें षट्कारक है. प्रत्येक द्रव्य, जितने अनंत द्रव्य है उसकी एक समयकी पर्यायमें षट्कारक है. पर्याय पर्यायकी कर्ता, पर्याय कर्ताका कार्य-कर्म, पर्याय पर्यायका साधन-करण, पर्याय करके पर्यायमें रभी-संप्रदान, पर्यायसे पर्याय लुई और पर्यायके आधारसे पर्याय लुई. आहाहा..! अनंत जितने द्रव्य जगतमें है, भगवानने जो कहे, प्रत्येक द्रव्यकी एक समयकी पर्यायमें षट्कारक परिणामन है. आहाहा..! अज्ञानीको भी अज्ञानमें षट्कारक परिणामन है. ज्ञानीको ज्ञान और आनंदमें षट्कारकका परिणामन है. आहाहा..! समझमें

आया? वह षट्कारक स्वसन्मुख करे. भले वस्तु बनी न हो, लेकिन प्रत्येक षट्कारकका परिणामन भगवान तो कहते हैं. जितने द्रव्य हैं, अरे..! एक परमाणु, एक परमाणुकी पर्याय. एक परमाणुकी पर्याय, उसमें षट्कारक है. आलाला..! कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादन, अधिकरण. छह बोलके सिवा कोई तत्त्व है नहीं. आलाला..!

यहां कहते हैं कि अपने आत्मामें लक्ष्य लगाकर, उपयोग सूक्ष्म करके अंदर धून लगावे. आलाला..! 'उपयोगमें सूक्ष्मता करते करते, चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते लुअे...' सूक्ष्म उपयोगमें षट्कारकका परिणामन करके, स्वसन्मुख करके, स्व ज्ञायक सन्मुख करना. अनंत कालसे किया नहीं. अनंत कालसे मुनिव्रत द्रव्यविंगी अनंत बार धारण किया. आलाला..! 'मुनिव्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक उपजायो'. उसमें कोई बाह्यकी क्रियासे आत्माको कुछ लाभ होता है, ऐसा बिलकूल नहीं है. आलाला..!

अंतरकी क्रिया रागसे रहित.. प्रभु! सूक्ष्म बात है. विकल्पसे भी भिन्न, अपना स्वरूप भिन्न है, ऐसा लक्ष्य करके 'चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते लुअे...' जाणन यह ज्ञान है. क्यों? प्रगटमें-पर्यायमें प्रगटमें आनंद है नहीं. सब प्राणीको पर्यायमें प्रगट आनंद है नहीं. मिथ्यादृष्टिको. ज्ञान प्रगट है. ज्ञानकी पर्याय प्रगट है. आलाला..! कहते हैं कि ज्ञानपर्याय द्वारा, प्रगटके द्वारा चैतन्यतत्त्वको (ग्रहण करे). जाणकतत्त्व है. क्योंकि प्रगटमें पर्यायमें तो वह है. पर्यायमें आनंद कि जो अंदर सूक्ष्म गुण है, उसकी पर्यायमें है नहीं. समकित्ती नहीं है, मिथ्यात्वी है. उसे ज्ञानमें ज्वाल आ गया, ज्ञानमें जाणन.. जाणन ज्ञानको पकडकर. 'चैतन्यतत्त्वको ग्रहण करते लुअे आगे बढ़े, वह जव कमसे सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है.' वह जव कमसे इस प्रकार सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है. देव-गुरु-शास्त्रसे नहीं, शब्दसे नहीं, श्रवणसे नहीं. आलाला..! जो कोई वाणी भगवानकी सुने उससे जो ज्ञान होता है, उससे भी आत्माकी सन्मुखता नहीं होती. क्योंकि सब पर सन्मुख दशा है. आलाला..! भगवानकी वाणी सुने लेकिन पर सन्मुख दशा है. परसन्मुख दशा स्वसन्मुखमें काम नहीं करती. आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रभु! अब्यास नहीं है अंदर इसलिये सूक्ष्म लगे. अभी तो प्राप्त करनेकी रीत यहां कही है.

सूक्ष्मसे सूक्ष्म ज्ञानपर्याय प्रगट है, क्षयोपशम भाव प्रगट है, आनंद प्रगट नहीं है. इसलिये चैतन्यको ग्रहण करे, यह ज्ञान में हूं, जैसे ग्रहण करके. आलाला..! 'वह जव कमसे सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है.' वो. किसिने लिजा था. चिठी पडी थी. फिरसे वो. वह लिया. अब १०५. शांतिसे बात समजनेकी चीज है, भगवान! यह कोई पंडिताईकी चीज नहीं है.

आत्माने परमार्थसे त्रिकाव अेक ज्ञायकपनेका ही वेश धारण किया हुआ है. ज्ञायक तत्त्वको परमार्थसे कोरुँ पर्यायवेश नहीं है, कोरुँ पर्याय-अपेक्षा नहीं है. आत्मा 'मुनि है' या 'केवलज्ञानी है' या 'सिद्ध है' ऐसी अेक भी पर्याय-अपेक्षा वास्तवमें ज्ञायक पदार्थको नहीं है. ज्ञायक तो ज्ञायक ही है. १०५.

१०५. 'आत्माने परमार्थसे त्रिकाव अेक ज्ञायकपनेका ही वेश धारण किया हुआ है.' क्या कहते हैं? समयसारमें यवा है. पुण्य, पाप, आस्रव अधिकार पूरा करे तब (विभते हैं), यह वेश पूरा हुआ. ऐसा पाठमें है. जैसे मोक्ष अधिकार पूरा हुआ वहां भी ऐसा विभा है. मोक्षका वेश पूरा हुआ. क्योंकि मोक्ष तो अेक समयकी पर्याय है. भगवान तो त्रिकावी द्रव्य है. उसे मोक्षका वेश भी लागू नहीं पडता. आलाला..! 'आत्माने परमार्थसे त्रिकाव अेक ज्ञायकपनेका ही...' ज्ञायकपनेका ही 'वेश धारण किया हुआ है.' आला..! सूक्ष्म बात है, भाई! मोक्षको भी वेश कहा है. समयसारमें है, पाठ है. मोक्ष .. फिर कहते हैं, मोक्षका वेश पूरा हो गया, मोक्षका वेश यवा गया. फिर दृष्टि अेक द्रव्य पर रही है, आनंदकी अेक बात रह गई. मोक्षकी पर्याय पर लक्ष्य नहीं, द्रव्य पर लक्ष्य है. समकितिका द्रव्य ध्रुव चिदानंद आनंद भगवंत, उस पर उसका लक्ष्य है. इसलिये समयसारमें प्रत्येक अधिकारमें, यह संवरका वेश पूरा हो गया, निर्जरका वेश पूरा हो गया, निकल गये. वेश निकल गये. आता है न उसमें? आलाला..! मोक्षका वेश निकल गया. आलाला..! क्योंकि मोक्ष तो अेक पर्याय है. वह तो ज्ञायकभावका अेक वेश है. मोक्षसे भी ज्ञायकभावका वेश त्रिकाव है. आलाला..! मोक्षकी पर्याय तो नहीं प्रगट होती है, वह हमेशा नहीं है. ज्ञायकपनेका वेश तो त्रिकाव है. आलाला..! भगवंत आत्मा ज्ञायक स्वभावका वेश त्रिकाव है. संवर, निर्जर, मोक्ष आदिका वेश तो (क्षणिक) है, वह तो पलटता है. आलाला..!

'आत्माने परमार्थसे तो त्रिकाव अेक ज्ञायकपनेका ही...' अेक ज्ञायकपना. ज्ञायक त्रिकाव.. त्रिकाव... त्रिकाव. मोक्ष भी अेक समयकी पर्याय है. और मोक्ष, संवर, निर्जर भी व्यवहारनयका विषय है. पर्याय है न. पर्याय व्यवहारनयका विषय है. आलाला..! भगवान मोक्षका वेश भी नित्य नहीं रहता, परंतु ज्ञायकका वेश नित्य रहता है. आलाला..! सूक्ष्म बात है, भाई! आलाला..! अेकेवा ज्ञायकद्रव्य, ज्ञायक हिरा यह वेश त्रिकाव है. मोक्षका वेश तो साद्विअनंत है. संवर, निर्जरका वेश तो

सादिसांत है. बंधको अेक ओर रभो. संवर, निर्जराका स्वांग आत्मा पर हो तो सादिसांत है. और मोक्षका स्वांग सादिसानंत है. और ज्ञायकका स्वांग अनादिसानंत है. आलाला..!

‘आत्माने परमार्थसे तो त्रिकाव...’ त्रिकाव और अेक ‘अेक ज्ञायकपनेका ही...’ निश्चयसे. सूक्ष्म बात है, प्रभु! मोक्ष भी पर्याय-पलटती अवस्था है. वल भी सादिसानंत है. ज्ञायक स्वरूप.. आला..! वल तो अनादिसानंत है. त्रिकाव निरावरण है. त्रिकाव निरावरण है. त्रिकाव अण्ड है. वहां अेक कला, वल अेक है. आलाला..! अण्ड और अेक त्रिकाव अैसा ज्ञायकभावका वेश त्रिकाव है. आलाला..! ‘त्रिकाव अेक ज्ञायकपनेका ही वेश...’ ही यानी निश्चय है. ज्ञायकपनेका ही. आलाला..! समकित्तिको या पंचम गुणस्थानवालेको या छठेवालेको, सबको ध्रुवकी धारा है. ध्रुवके ध्येयमें पडे हैं. ध्रुवके ध्यानके ध्येयमें धैर्यसे.. आलाला..! ध्रुणी-ध्रुणी पर्यायमें शांतिकी ध्रुणी धभा. आलाला..! त्रिकाव ज्ञायकके लक्ष्यसे. दूसरी कोण भी कियाकांडसे, अरे..! संवर, निर्जरा दुं हो उससे नयी शुद्धिकी वृद्धि हो, अैसा है नही. आलाला..! अैसी बात है.

वल बलिनकी वाणी निकली है. बलिन आयी नही है. उस वक्त अंदर अनुभवमेंसे आयी है. आनंदमेंसे भाषा आ गयी. किसिने विभ विया था. नही तो बालर भी नही आये. आलाला..! क्या कला?

भगवान आत्माका वेश क्या? देश क्या? देश असंभ्य प्रदेश. वेश ज्ञायकभाव. वहां दृष्टि देनेसे आत्माकी प्राप्ति होती है. अेक वेश त्रिकाव ज्ञायकभाव. वहां दृष्टि देनेसे सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति होती है. आलाला..! ‘ज्ञायक तत्त्वको परमार्थसे...’ है? ज्ञे ज्ञायक तत्त्व है ज्ञाननेवाला, आलाला..! चैतन्यलिरा ध्रुव लिरा. अेक ज्ञायक लिराका ‘परमार्थसे कोण पर्यायवेश नही है,...’ कोण पर्यायवेश नही है. पुण्य और पाप तो नही है, आस्रव, बंध तो नही है, संवर, निर्जरा और मोक्ष भी नही है. आलाला..! अैसा प्रभु अंदर ज्ञायकभावसे विराजमान ध्रुवपने, उसका वल वेश त्रिकाव है. ‘परमार्थसे कोण पर्यायवेश नही है,...’ आलाला..! वल बालरके वेशकी बात नही है, हां! वस्र छोड दे, वल वेश नही है जवका. बाह्य त्यागग्रहण तो आत्मामें है नही. आत्मामें अेक गुण ही अैसा है. त्यागउपादानशून्यत्व शक्ति. परका त्याग और परका ग्रहण, उससे तो आत्मा त्रिकाव शून्य है. आलाला..! मात्र त्यागग्रहण हो तो व्यवहारसे. प्रभु त्रिकावी ज्ञायकका ग्रहण करते हैं, वहां रागका त्याग हो जाता है. आलाला..! अैसी चीज है.

‘परमार्थसे कोण पर्यायवेश नही है,...’ भगवंत आत्माको नित्य टिकनेके सिवा

क्षणिक कोई वेश उसको नहीं है. आला..! 'कोई पर्याय-अपेक्षा नहीं है.' द्रव्यको कोई पर्यायकी अपेक्षा नहीं है. आलाला..! मोक्षकी पर्यायकी अपेक्षा भी द्रव्यको नहीं है. क्योंकि मोक्ष तो साद्विअनंत है. वस्तु अनाद्विअनंत है. आलाला..! 'कोई पर्याय-अपेक्षा नहीं है.' आलाला..! सूक्ष्म पडे.

बहिन तो रात्रिमें थोडा बोले थे. उसमें बहनोंने विभ विधा था. नहीं तो वे तो मुट्टेकी भांति (है). आत्माके आनंदमें रहती है, बाहरकी कुछ नहीं पडी. आलाला..! जन्मदिन आयेगा न? दूज. श्रावण शुक्ला दूजका जन्मदिन आयेगा. उनको हिरासे वधायेंगे. जडे रहेंगे मुट्टेकी भांति. अभी तो शक्ति नहीं है. मैंने तो रातको कला कि कुर्सी (रजो). शक्ति नहीं है. बिलकूल अशक्त हो गया है. आहारमें कुछ नहीं. अकेला आत्मा.. आत्मा.. और आत्मा. बाकी कुछ नहीं. मैंने तो कला, कुर्सी लाकर बैठना चालिये. आठ जन तो आये हैं. ... आलाला..! रात्रिमें बहिनकी यह वाणी निकल गयी है. आलाला..!

'कोई पर्याय-अपेक्षा नहीं है.' उसे कोई पर्यायका वेश नहीं है कि हमेशा रहे. 'आत्मा मुनि है, केवलज्ञानी है या सिद्ध है, ऐसी अेक भी पर्याय-अपेक्षा वास्तवमें..' आलाला..! सिद्ध भी पर्याय है. द्रव्य जो त्रिकावी आनंदका नाथ वज्र बिंब, उसमेंसे थोडा भी पलटा नहीं जाता. पर्याय पलटती है, वस्तु वज्र बिंब अंदर चैतन्य आनंदकंद, अकेले चैतन्यके हिरा-माणिक्य भरे हैं. आलाला..! जैसे आत्माको परकी अपेक्षा (तो नहीं है, लेकिन) मुनि, केवलज्ञानी या सिद्ध, ऐसी अेक भी 'पर्याय-अपेक्षा वास्तवमें ज्ञायक पदार्थको नहीं है.' आलाला..! कमजोरी बहुत आ गयी है. आलाला..! १०५वां बोल बहुत अच्छा आ गया है. मौके पर (आया है).

आत्माको त्रिकावी ज्ञायकभावके वेशके सिवा, मुनि यानी संवर-निर्जरा और मोक्षका वेश उसे लागू नहीं पडता. उसकी तो अवधि है. यह तो अवधि बिनाकी यीज अनाद्विअनंत नित्यानंद प्रभु (है). आलाला..! जिसके उपर, नित्यानंद प्रभुके उपर यह सब पर्याय तिरती है. संवर, निर्जरा और मोक्ष... आलाला..! वास्तवमें ज्ञायक पदार्थको उस पर्यायकी अपेक्षा नहीं है. किसकी? मुनि, केवलज्ञानी अथवा सिद्ध. उस पर्यायकी द्रव्यको अपेक्षा नहीं है. द्रव्य तो त्रिकाल अेकरूप है. अजंड आनंद प्रभु परमात्म स्वरूप सच्चिदानंद सत् चिदानंद स्वरूप अेकरूप त्रिकाल है. उसको यहां ज्ञायक कहते हैं. जैसे ज्ञायककी दृष्टि करना और अनुभवमें आनंद आना, उसका नाम सम्यग्दर्शन है. श्रावक और मुनिपना तो... बापू! आलाला..! पंचम गुणस्थान और छठा

गुणस्थान, बापू! वह दशा तो... आलाला..! अभी चौथेका ठिकाना नहीं है. अरे..! प्रभु! क्या हो? भाई! ऐसा मनुष्यपना मिला है. सब छोड़ दे. चिंता छोड़कर ईस अक्का कर. दुनिया प्रशंसा करेगी, लेकिन वह साथमें नहीं आयेगी. आलाला..!

प्रभु अेक ज्ञायकभाव त्रिकावीको जिसने दृष्टिमें लिया और अनुभवमें आ गया, उसमें मुनि, केवलज्ञान या सिद्ध तीनों वेशकी उसको अपेक्षा नहीं है. आलाला..! राग व्यवहार रत्नत्रयकी अपेक्षा उसे तीन कालमें नहीं है. रत्नत्रय व्यवहार करे तो निश्चय प्राप्त करे, त्रिकाल गूँठ है. व्यवहार रत्नत्रय तो राग-ऊँट है. राग है, शुभराग है, विषकूँभ है. विषकूँभ. मोक्ष अधिकारमें आया है न? आलाला..!

मुमुक्षु :- कठिन पड़ता है.

उत्तर :- अभ्यास नहीं है. और यह बात चलती नहीं है. चलनेमें बाहरकी प्रवृत्ति करो, यह करो, वह करो. सेठ लोगोंको झूसद नहीं है. ऐसी प्रवृत्ति करे उसमें रुक जाय. रतनवालज्ज! आलाला..! हमारे मङ्गलभाईने तो ... मङ्गलभाई बहुत वक्तसे पडे हैं. ... भावनगरके सेठ है. बहुत सालसे. आलाला..!

प्रभु! क्या कहें? अरे..! प्रभुका विरह हुआ. पीछे मार्ग वाणीमें रह गया. आलाला..! प्रभु तो मुक्तिमें पधारें. सीमंधर भगवान वहां रह गये. आलाला..! उनकी वाणी थी अंदर, वह वाणी अंदर रह गई. हम तो भगवानके पास थे. वहां समवसरणमें हमेशा जाते थे. अंतिम स्थितिमें परिणाम ठीक नहीं रहे (तो) ईस काठियावाडमें जन्म हुआ. उमरावा. भगवानकी वाणी रह गई. आलाला..! त्रिकालनाथका विरह हुआ. पंचमकालमें भगवानकी वहां उत्पत्ति नहीं है. केवलज्ञानकी उत्पत्ति भी कोई ज्जवको नहीं और केवलज्ञानीकी मौजूदगी नहीं है. उनकी वाणीकी मौजूदगी है. उसमें आत्मा क्या है, उसे बताया है वह यथार्थ है. आलाला..! गजब बात है!

‘वास्तवमें ज्ञायक पदार्थको...’ अेक भी अपेक्षा नहीं है. ‘ज्ञायक तो ज्ञायक ही है.’ मोक्ष भी साद्विअनंत है. संसार अनादिसांत है. संवर, निर्जरा साद्विअनंत है. आस्रव, बंध, पुण्य-पाप अनादिसांत है. आलाला..! मोक्ष भी साद्विअनंत है. प्रभु अनाद्विअनंत है. आलाला..! अनाद्विअनंत मलाप्रभु स्वयं, उसकी नजर कर, नाथ! वहां जा, वहां जा. तेरा देश और तेरा वेश वहां है. तेरा देश प्रभु वह स्वदेश है. आलाला..! श्रीमद्ने अेक बार कला है, और बलिनने कला है, ईसमें आता है. कौन-सा बोल है? ४०१ बोल. पृष्ठ-१७६.

‘ज्ञानीका परिणामन विभावसे विमुअ होकर स्वइपकी ओर ढल रहा है.’

आलाला..! क्या कला? ४०१. धर्मीका परिणामन विभावसे विमुञ्ज लोकर, दया-दानके विकल्पसे भी विमुञ्ज लोकर, शास्त्र श्रवणसे भी विमुञ्ज लोकर स्वर्णपकी ओर अपने शायक स्वर्णपकी ओर ढल रहा है. 'ज्ञानी निज स्वर्णपमें परिपूर्णस्वसे स्थिर हो जानेको तरसता है.' साधक है न. अंदर अेक जम जाऊँ, जम जाऊँ, अस. 'यह विभावभाव हमारा देश नहीं है.' देजो! विभावभाव हमारा देश नहीं है. आलाला..!

श्रीमद् आभिरमें कहते हैं, श्रीमद्की दशा भी ऐसी थी. अेकवतारी हो गये हैं. श्रीमद् वर्तमान वैमानिकमें है. वहांसे मनुष्य लोकर मोक्ष जानेवाले हैं. अेक लव है. आलाला..! स्वयं कहकर गये हैं और यथार्थ है. अेकदेश भोगना बाकी रहा है, ऐसा बोले थे. भाषा भूल गये.

मुमुक्षु :- शेष कर्मनो भोग भोगववो..

उत्तर :- हां. शेष कर्मनो भोग भोगववो अवशेष रे, तेथी अेक देह धारीने मोक्ष स्वर्ण रे, जशुं स्वर्ण स्वदेशमां. स्वदेश यह. आलाला..! स्वदेश असंज्य प्रदेशी भगवान आत्मा, उसके सिवा सब परदेश है.

यहां बहिन कहते हैं, 'यह विभावभाव हमारा देश नहीं है.' आलाला..! 'ईस परदेशमें हम कहां आ पहुंचे?' अरेरे..! छन्नस्थ अवस्था और विकल्पमें आ गये. विकल्प-राग तो आता है, पूर्ण नहीं हुआ ईसलिये. अरे..! 'ईस परदेशमें हम कहां आ पहुंचे?' ओहोहो..! समकित्तीको राग आता है. लेकिन राग परदेश द्विभता है. आलाला..! वह हमारा देश नहीं. जहां हमें सदा टिककर रहना है, वह हमारा देश नहीं. कला न? 'हमे यहां अच्छा नहीं लगता.' विकल्प, व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प अच्छा नहीं लगता. आलाला..! वह हमारा देश नहीं. 'यहां हमारा कोई नहीं है.' विकल्प असंज्य प्रकारका शुभादि हो, उसमें हमारा कोई नहीं है. आलाला..!

'जहां ज्ञान, श्रद्धा...' यानी समकित 'चारित्र, आनंद, वीर्यादि अनंतगुणस्वर्ण हमारा परिवार असता है...' हमारा परिवार तो यह है. आलाला..! यह अंतरकी बात है, भाई! 'हमारा परिवार असता है वह हमारा स्वदेश है. अब हम उस स्वर्णस्वदेशकी ओर जा रहे हैं.' आलाला..! अपना शायक स्वर्ण त्रिकावी भगवंत, उस देशकी ओर हम जा रहे हैं. आलाला..! 'हमें त्वरासे...' त्वरामें कमबद्ध नहीं छूटता. कमबद्धमें आ जाता है. ऐसी दशा हुई वहां कममें केवलज्ञान अल्प कालमें हो जायेगा. ऐसा ही कमबद्ध है. त्वरासे कला ईसलिये अेकदम कोई कम पलट गया, ऐसा है नहीं. आलाला..! हमे हमारे देशमें जाना है, 'त्वरासे अपने मूल वतनमें...' यह मूल वतन. असंज्य प्रदेशी शायक मूल वतन है. आलाला..! मूल

દેશ. બાકી સબ પરદેશ. આહાહા..!

યહાં શબ્દ ક્યા હૈ? 'ત્વરાસે અપને મૂલ વતનમેં જાકર...' 'ત્વરાસે અપને મૂલ વતનમેં જાકર આરામસે બસના હૈ...' હમારા તો જ્ઞાયકભાવ હૈ. ત્વરાસે અલ્પ કાલમેં અપને વતનમેં જાકર બસના હૈ. 'મૂલ વતનમેં જાકર આરામસે બસના હૈ...' આનંદ, અતીન્દ્રિય આનંદમેં બસના હૈ. સ્વદેશ તો અતીન્દ્રિય આનંદકા દેશ હૈ. 'જહાં સબ હમારે હૈ.' વિભાવમેં કોઈ હમારા નહીં. આહા..! જિસ ભાવસે તીર્થકર ગોત્ર બંધે, વહ ભાવ હમારા નહીં. હમારા સ્વદેશ નહીં. આહાહા..! પંચ મહાવ્રતકા પરિણામ, બારહ વ્રતકા વિકલ્પ, આત્મા નહીં, આત્માકા દેશ નહીં. આહાહા..! ઐસી કઠિન બાત હૈ. 'આરામસે બસના હૈ, જહાં સબ હમારે હૈ.' સબ અનંત-અનંત ગુણ જ્ઞાન, આનંદ, શાંતિ, સ્વચ્છતા, પ્રભુતા, જીવતર, ચિતિ, દશિ, જ્ઞાન, સુખ, વીર્ય, પ્રભુતા, વિભુત્વ, સર્વદર્શિ, સર્વજ્ઞત્વ, સ્વચ્છતા ઐસી અનંત-અનંત શક્તિકા મેરા દેશ હૈ, વહાં આરામસે અપને વતનમેં બસના હૈ. આહાહા..! યે વતન. કાઠિયાવાડ વતન, ફલાના વતન ધૂલમેં ભી નહીં હૈ. આહાહા..! યહાં તો રાગકી પર્યાયસે ભી ભિન્ન લે લિયા. જ્ઞાયકભાવ હમારા ત્રિકાલી હમારા દેશ હૈ. વહાં સબ હમારે હૈ. જ્ઞાન, આનંદ, શાંતિ, સ્વચ્છતા, પ્રભુતા અનંતા-અનંતા ચૈતન્ય રત્નાકરસે ભરા ભગવાન, વહી હમારા વતન હૈ. વહાં આરામસે, આનંદસે બસના હૈ, રહના હૈ. ફિર ભવ-ભવ હૈ નહીં. આહાહા..!

શ્રીમદ્ને ઐસા કહા, 'શેષ કર્મનો ભોગ છે,' અંદર ઐસા દેખતે હૈં તો અભી ઈસી ભવમેં પૂર્ણ જ્ઞાયક હોંગે ઐસા લગતા નહીં હૈ. 'શેષ કર્મનો ભોગ છે, ભોગવવો અવશેષ રે..' પ્રભુ! થોડા ભોગના બાકી રહેગા ઐસા લગતા હૈ. 'તેથી દેહ એક ધારીને જાશું સ્વરૂપ સ્વદેશ રે..' અપને સ્વરૂપકે સ્વદેશમેં જાના હૈ. ઉસ સમયમેં ઉનકી શક્તિ બહુત થી. ઉસ સમયમેં વહી એક પુરુષ થે. એક ધર્મદાસ થે, ઉસ વક્ત. ક્ષુલ્લક ધર્મદાસ. ઉતના ક્ષયોપશમ નહીં થા. સમ્યજ્ઞાન દીપિકા બનાયી હૈ ન? ધર્મદાસ ક્ષુલ્લક. ઔર ઈનકો તો ક્ષયોપશમ ગજબકા થા! ઉમ્મ છોટી. ૩૩ સાલમેં દેહ છૂટ ગયા. ક્ષયોપશમ તો ઈતના દરિયા.. લગભગ ધર્મીમેં ઈતના ક્ષયોપશમ ઉસ સમયમેં નહીં હોગા. દૂસરા જ્ઞાન હોગા અનેક પ્રકારસે. વહ સ્વયં ઐસા કહતે હૈં, હમેં યહ થોડા ભોગના દિખતા હૈ. હમેં વીતરાગતા (પૂર્ણ) હોગી ઐસા નહીં લગતા હૈ. એકાદ ભવ કરના પડેગા. ફિર હમ હમારે દેશમેં-વતનમેં જાકર આનંદમેં રહેંગે. વહ સ્વદેશ હૈ. બાકી વિકાર આદિ તો પરદેશ હૈ. ૧૦૫ હો ગયા. ફિર ૧૪૦. ૧૦૫કે બાદ ૧૪૦. ઈસમેં લિખા હૈ. કિસીને લિખકર રખા હૈ.

**‘है’, ‘है’, ‘है’, ऐसी ‘अस्ति’ ज्यालमें आती है न? ‘ज्ञाता’, ‘ज्ञाता’, ‘ज्ञाता’ है न? वह मात्र वर्तमान जितना ‘सत्’ नहीं है. वह तत्त्व अपनेको त्रिकाल सत् बतला रहा है, परंतु तू उसकी मात्र ‘वर्तमान अस्ति’ मानता है! जो तत्त्व वर्तमानमें है वह त्रैकालिक होता ही है. विचार करनेसे आगे बढ़ा जाता है. अनंत कालमें सब कुछ किया, एक त्रैकालिक सत्की श्रद्धा नहीं की. १४०.**

१४०. आलाला..! अस्तिके ज़ोरका है. ‘है’, ‘है’, ‘है’. मेरा प्रभु तो है, है और है. ज्ञायकभाव त्रिकाल भाव... आलाला..! है, है और है. भूतकालमें था, वर्तमानमें है और भविष्यमें रहेगा. तीनों काल रहनेवाली मेरी चीज़ है. आलाला..! ‘ऐसी ‘अस्ति’ ज्यालमें आती है न?’ अस्तिमें ज्यालमें आती है न? आती है न, इसलिये आती है, आती है. आलाला..! ‘ज्ञाता’, ‘ज्ञाता’, ‘ज्ञाता’... है, है वह कौन है? ज्ञाता, ज्ञाता, ज्ञाता वह मैं हूँ. आलाला..! है, है, है. है की अस्ति. मेरी अस्ति ज्ञाता, ज्ञाता, ज्ञाता (स्वप्न है). दूसरी चीज़ मेरेमें है नहीं. आलाला..!

‘वह मात्र वर्तमान जितना ‘सत्’ नहीं है.’ क्या कहते हैं? जो वर्तमान पर्यायमें आनंद आदि आया, उतना सत् नहीं है. पर्यायका अनुभव है, लेकिन पर्याय जितना वह सत् नहीं है. पर्याय बताती है कि अंदर भगवान पूर्ण है. पर्याय बताती है कि अंदर भगवान पूर्ण है. आलाला..! है? ‘वह मात्र वर्तमान जितना ‘सत्’ नहीं है. वह तत्त्व अपनेको त्रिकाल सत् बतला रहा है,...’ क्या कहते हैं? वर्तमानमें अतीन्द्रिय आनंदका नाथका अनुभव हुआ तो पर्यायमें आनंद आया. ध्रुव तो पर्यायमें आता नहीं. आलाला..! ध्रुवका आनंद भी आता नहीं. ध्रुव तो ध्रुव है, आनंद तो पर्यायमें आता है. आलाला..! कहते हैं, ‘अपनेको त्रिकाल सत् बतला रहा है,...’ कौन? वर्तमान सत् आनंद द्विभूता है, वह त्रिकालको बताता है. वह पर्याय त्रिकालको बताती है. उसका नमूना सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् आनंद जो सम्यग्दर्शनमें आया, वह नमूना ऐसा बताता है कि यह चीज़ पूर्ण है. आलाला..! है?

‘वर्तमान जितना सत् नहीं है. वह तत्त्व अपनेको त्रिकाल सत् बतला रहा है.’ आलाला..! क्या कहते हैं? पर्यायमें ज्ञाता-दृष्टाका अनुभव होता है, वह पर्यायमें होता है. द्रव्यमें नहीं. द्रव्यका कभी अनुभव होता नहीं. आलाला..! २०वें बालमें

आया है। प्रवचनसारमें (अविंगग्रहणके) २०वे बोलमें ऐसा है कि मैं तो आनंदमात्र वस्तु आत्मा हूँ। ध्रुव तो मुझे आनंदमें आता नहीं, मैं तो जितना आनंद वेदनमें आता है, वही मैं आत्मा हूँ। २०वे बोलमें है। समझमें आया? आह्लाहा..! मैं येतना हूँ। मुझे जो पर्यायमें आनंद आता है, मैं उतना हूँ। त्रिकावकी दृष्टि तो है, परंतु वेदनमें त्रिकाव ध्रुव नहीं आता। आह्लाहा..! वेदन पर्यायका होता है। पर्याय ऐसा कहती है... आह्लाहा..! कि मैं पर्याय है वही आत्मा हूँ। ऐसा कहते हैं। २० बोलमें ऐसा कहते हैं। अविंगग्रहणका २०वां बोल है। अविंगग्रहणका २०वां बोल। मैं वेदनमें आता हूँ उतना आत्मा हूँ। आह्लाहा..! वेदनमें ध्रुव नहीं आता। ध्रुवकी मुझे दृष्टिकार नहीं। दृष्टि है वहां। आह्लाहा..! लेकिन दृष्टि पर्याय है। दृष्टिमें ध्रुव है, वेदनमें आनंद है। आह्लाहा..! ऐसी बात है। उसमें है। प्रवचनसारमें है न? १७२ गाथा। १७२ गाथाका २०वां बोल। १८, १९, २०की रात्रिमें चर्चा हुई थी।

१८में ऐसा है, द्रव्य जो उसका भेद है वही मैं नहीं। १९में, गुणका भेद मैं नहीं, २०में पर्यायका भेद, पर्याय है वही मैं हूँ। मुझे वेदनमें पर्याय आती है। वेदनमें ध्रुव आता नहीं। आह्लाहा..! समझमें आता है? भाषा तो सादी है। आह्लाहा..! २०वें बोलमें है। अविंगग्रहणके २० बोलमें है। मैं अनुभवमें आनेवाला आत्मा, वही आत्मा। मुझे तो वेदनमें आता है वही आत्मा है। वेदनमें नहीं आता है, वही आत्मा नहीं। भले दृष्टिका विषय ध्रुव हो। आह्लाहा..!

ऐसे यहां कहते हैं, 'जो तत्त्व वर्तमानमें है...' क्या कहते हैं? तू उसकी मात्र वर्तमान अस्ति मानता है। 'जो तत्त्व वर्तमानमें है...' वही त्रिकाव है। वर्तमानमें जिसका नमूना ज्वालामें आया, वही यीज मात्र वर्तमान ही नहीं है। किसी भी यीजका वर्तमानमें अनुभव होता है, वही वर्तमान त्रिकावको बताता है। अंदर त्रिकावी यीज है। आह्लाहा..! 'वर्तमान अस्ति मानता है। जो तत्त्व वर्तमानमें है वही त्रिकाविक होता ही है।' क्या कहा? जो यीज वर्तमानमें आनंदका अनुभव हुआ, तो वही यीज त्रिकावी है। भले त्रिकावीका आनंद नहीं आया। आह्लाहा..! सूक्ष्म बहुत आया।

पर्यायमें जो वेदनमें आया, वही ध्रुव आया नहीं। मैं तो पर्याय वेदनमें आयी वही मैं हूँ। मुझे आनंदका अनुभव (हुआ), वही मैं आत्मा हूँ। ध्रुवको वहां आत्मा नहीं लिया। ध्रुवको ध्येयमें ले लिया। ध्येयमें ध्रुव है, वेदनमें नहीं। आह्लाहा..! ऐसी बातें। यहां कहते हैं, 'परंतु तू उसकी मात्र 'वर्तमान अस्ति' मानता है।' क्या कहा? 'वही तत्त्व अपनेको त्रिकाव सत् बतवा रहा है,...' जो वर्तमानमें पर्याय दिखती है, वही त्रिकावको बतवा रही है। वर्तमानमें शांतिका अंश आया सम्यग्दर्शनमें,

वह त्रिकाव ध्रुवपनेको बताता है. ध्रुव भले पर्यायमें आता नहीं, ध्रुव भले प्रत्यक्ष द्विजनेमें आता नहीं, प्रत्यक्ष द्विजनेमें आता नहीं,.. आलाला..! 'त्रिकाव सत् बतवा रहा है, परंतु तू उसकी मात्र 'वर्तमान अस्ति' मानता है. जो तत्त्व वर्तमानमें है...' सिद्धांत कहते हैं. 'जो तत्त्व वर्तमानमें है वह त्रैकालिक होता ही है.' अर्थात् वर्तमान पर्याय जितना तत्त्व है नहीं. कोई भी तत्त्व वर्तमान पर्याय जितना है नहीं. वर्तमान पर्याय जो है वह त्रिकावकी बताती है. वह त्रिकावकी पर्याय है. आलाला..!

'जो तत्त्व वर्तमानमें है वह त्रैकालिक होता ही है.' आलाला..! निर्मलकी बात ली है, हां! निर्मलकी बात है. निर्मल तत्त्वकी पर्याय अनुभवमें आयी तो वह पर्याय जितना नहीं है, वह पर्याय ध्रुव त्रिकाव है उसकी पर्याय है. वर्तमान पर्याय जितना नहीं. आलाला..! 'विचार करनेसे आगे बढ़ा जाता है.' ... ऋकाव हो जाता है. अनंत कालमें सबकुछ किया. आलाला..! बालरमें अनंत कालमें सब (किया). आत्माके सिवा, आत्माका अनुभव और समकितके सिवा. अनंत बार किया की. अनंत बार व्रत लिये, तपस्या की. 'अनंत कालमें सब कुछ किया, अंक त्रैकालिक सत्की श्रद्धा नहीं की.' त्रिकाव प्रभु भगवान अनादिअनंत ज्ञायक, उसकी श्रद्धा लिये बिना रहसता है. (श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)